प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
एम.ए.पीएच्.डी.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सतारा

प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि **कु. कुंदा मुकुंदराव निंबाळकर** ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्(हिन्दी) उपाधि के लिए **''हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में दलितचेतना'' (खारे जल का गाँव, मोंगरा, सुबह की तलाश, जंगल के आसपास के संदर्भ में)** शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थीनी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं मेरी जानकारी के अनुसार वे सही है। कु. कुंदा मुकुंदराव निंबाळकर के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

सतारा

दिनांक
29/6/2011

डॉ. बी. डी. सगरे
शोध-निर्देशक

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते है कि **कु. कुंदा मुकुंदराव निंबाळकर** का एम्.फिल्(हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध **''हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में दलितचेतना'' (खारे जल का गाँव, मोंगरा, सुबह की तलाश, जंगल के आसपास के संदर्भ में)** परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

(प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सतारा

(प्रा. आर. जी. चव्हाण)
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सतारा

29-06-01

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

प्रख्यापन

"हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में दलितचेतना" (खारे जल का गाँव, मोंगरा, सुबह की तलाश, जंगल के आसपास के संदर्भ में) यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल के लघु-शोध-प्रबंध के रुप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सतारा

दिनांक
29-6-2001

Nimbalkar
(कु. के. एम्. निंबाळकर)

प्राक्कथन

आज विश्वसाहित्य में उपन्यास-विधा लोकप्रिय रही है। भाव और शिल्प की दृष्टि से यह विधा संपन्न रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल में उपन्यास में मानव-जीवन, समाज-जीवन, जीवन की व्यथा, कथा, विवशता, शोषण, नारी-जीवन, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन आदि सभी बातों का यथार्थ रुप में चित्रण होने लगा। इसी कारण उपन्यास को 'मानवी जीवन का महाकाव्य' कहा जाता है। सामाजिक प्रतिबध्दता साहित्य की प्रवृत्ति एवं विशेषता है। प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है। उन्होंने उपेक्षित व्यक्ति, नारी, ग्रामजीवन और दलित जीवन आदि पर उपन्यास लिखे। सन 1960 के पश्चात् हिंदी साहित्य में 'आँचलिक उपन्यास' नाम की एक नई विधा विकसित हो गयी। विशिष्ट जनपद का, विशिष्ट जनजाति का समग्र-जीवन चित्रित करनेवाले उपन्यास 'आँचलिक उपन्यास' कहलाते है। आज आदिम, जनजाति, शोषित, दलित आदि पर साहित्य लिखा जा रहा है। आज शिक्षा-व्यवस्था, सरकारी सुधार योजना, समाज सेवकों का कार्य आदि के कारण उपेक्षित, शोषित समाज अपने अधिकार के लिए संघर्ष कर रहा है। दलित समाज में जनजागरण का दौर चल रहा है। सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन हो रहा है। नई सभ्यता, नई चेतना, नई संस्कृति, नई भावधारा ग्रामजीवन और समाजव्यवस्था में बह रही है। इस चेतना को चित्रित करना इस लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश रहा है।

दलितों का जीवन चिंतन का विषय रहा है। आज के साहित्य में इसे विशेष स्थान भी मिला है। मराठी साहित्य में 'दलित साहित्य' एक महत्वपूर्ण विधा है। हिंदी साहित्य में भी दलितों का जीवन चित्रित हुआ है। हिंदी में प्रेमचंद, निराला, भगवतीचरण वर्मा, रांगेय राघव, फणीश्वरनाथ रेणु, जगदीशचंद्र, अमृतलाल नागर, मदन दीक्षित, भगवतीप्रसाद शुक्ल, शिवप्रसाद

सिंह, नागार्जुन, शिवशंकर शुक्ल, राहुल सांकृत्यायन, सीतारामशरण गुप्त आदि अनेक रचनाकारों ने अपनी कलम से दलितों का जीवन मुखरीत किया। डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, विवेकी राय, डॉ .बदरीप्रसाद, डॉ. एन. सिंह, डॉ. ज्ञानचंद गुप्त, डॉ. नामवर सिंह आदि कई श्रेष्ठ आलोचकों और समीक्षकों ने दलित जीवन के तथा उपन्यास-विधा के सभी पहेलुओंपर विस्तृत विवेचन किया।

स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज जीवन में परिवर्तन हुआ। साथ-ही-साथ साहित्य में भी नई-नई प्रवृत्तियों का आगमन हुआ। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थिति में परिवर्तन हुआ उससे साहित्य भी प्रभावित हुआ। महात्मा गांधी, आंबेडकर, फुले, शाहु, सयाजीराव गायकवाड आदि जैसे समाजसुधारकों के कार्य के परिणामस्वरुप धीरे-धीरे दलितों के जीवन में परिवर्तन होने लगा। विशेषता आंबेडकरजी के 'संगठीत बनो, संघर्ष करो' इस नारे से प्रभावित दलितों में आत्मचेतना जाग उठी। धर्म-परिवर्तन, कालाराम मंदिर प्रवेश, महाड का आंदोलन आदि घटना से दलित समाज प्रभावित हुआ। अपने अधिकार की रक्षा के लिए, अस्मिता की रक्षा के लिए यह समाज संघर्ष करने लगा। चेतित दलित समाज का चित्रण साहित्य में होने लगा। साहित्य दलित चेतना का पक्षधर है।

भारतीय समाज व्यवस्था में धर्म, ग्रंथ का अधिक महत्व है। धर्मगुरु समाजव्यवस्था के कर्ता बने है। इस व्यवस्था में एक ऐसा वर्ग है, जो दबा है, कुचला है, रौंदा है उसे दलित कहा जाता है। दलित कोई विशिष्ट जाती नहीं। जिसका मनुष्य के नाते जीने का हक छीन लिया है, वह दलित है। दलित शब्द से हिंदु जातीव्यवस्था वर्ण वर्ग,व्यवस्था का परिचय होता है। सिध्द, नाथ, संत, भक्त आदि की रचनाओं में जातिभेद का विरोध किया है। आजादी के बाद दलितोध्दार, दलित-जागरण, दलित-मुक्ति, दलित-संगठन, समानता, आरक्षण आदि रुप में कार्य शुरु हुआ। शिक्षित दलित में विद्रोह का भाव पनप उठा। इसी विद्रोह को 'चेतना' कहा जाता है। दलित-चेतना, दलितों का संगठन, दलितों का विद्रोह आदि को स्पष्ट करना प्रस्तुत शोध-प्रबंध का उद्देश रहा है।

हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में जनजीवन के चित्रण के साथ-साथ जनजीवन में उत्पन्न होनेवाली चेतना प्रवृत्ति को भी चित्रित किया जाता है। सांस्कृतिक जागरण और सामाजिक एकता का कार्य साहित्य करता है। जाती भेदाभेद, छुआछूत की भावना, वंशकुल श्रेष्ठता की प्रवृत्ति आदि को जड़ से उखाड़ने का कार्य साहित्य करता है। इसी साहित्य ने उपेक्षित, लांछित, अपमानित, प्रताडित दलित की व्यथा को वाणी देने का कार्य किया। इस परिवर्तित, प्रगतिवादी साहित्य में जो भी पात्र है, वे सभी साहित्यिकारों के विचारों के वाहक है। यातायात की सुविधा, नागरीकरण, औद्योगिकरण, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, प्रसार माध्यम, नगरों का आकर्षण आदि के कारण समाज जीवन परिवर्तित हो रहा है, तथा प्राचीन संस्कृति की जड़े हील रही है। दलित जीवन में भी परिवर्तन हो रहा है। इसके दर्शन साहित्य में होते है। उसे चित्रित करना लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के लिए भगवतीप्रसाद शुक्ल का 'खारे जल का गाँव', शिवशंकर शुक्ल का 'मोंगरा', नरेंद्रदेव वर्मा का 'सुबह की तलाश', राकेश वत्स का 'जंगल के आसपास' आदि उपन्यासों का आधार लिया है। इन उपन्यासों के आधारपर हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में दलित जीवन, उनकी समस्या और उनमें उत्पन्न दलित चेतना आदि पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को छह अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय - 'हिंदी साहित्य तथा आँचलिक उपन्यासों में दलित जीवन का चित्रण' इस अध्याय में साहित्य और समाज, साहित्य और समाजजीवन का संबंध, समाज की निर्मिती आदि को स्पष्ट करते हुए 'दलित' शब्द की व्याख्या, दलित शब्द का व्यापक और संकुचित अर्थ स्पष्ट किया है। दलितों का जीवन और आज की स्थिति स्पष्ट करते हुए दलितोध्दार का कार्य स्पष्ट किया है। दलित चेतना का निर्माण और उसका महत्व स्पष्ट करते हुए दलित संगठन पर बल दिया है।

द्वितीय अध्याय - 'हिंदी उपन्यासों में दलित-जीवन' (खारे जल का गाँव, मोंगरा, सुबह की तलाश, जंगल के आसपास के संदर्भ में) इस अध्याय में भारतीय समाज व्यवस्था में धर्म का स्थान, दलित साहित्य और आजादी के पश्चात बदली हुई समाज व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए आलोच्य उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन स्पष्ट किया है। उनकी सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति स्पष्ट करते हुए विकासोन्मुखी और चेतित दलित जीवन को अभिव्यक्त किया है।

तृतीय अध्याय - 'आँचलिक उपन्यासों में चित्रित दलित समस्याएँ' इसके अंतर्गत साहित्य और समस्या का संबंध स्पष्ट करते हुए दलितों की समस्यापर प्रकाश डाला है। इसके अंतर्गत अंधविश्वास की समस्या, शोषण की समस्या, जनआंदोलन की समस्या, नारी शोषण की समस्या, यौनसंबंध और अवैध धंधों की समस्या, जातीय भेदाभेद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, अशिक्षा की समस्या आदि समस्याओं का विस्तार के साथ विवेचन किया है। साथ-ही-साथ भौतिक सुविधाओं के अभाव की समस्या, यातायात की समस्या, भूख की समस्या, नशा की समस्या आदि गौण समस्याओंपर भी विचार किया है।

चतुर्थ अध्याय - 'हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में दलित-चेतना' इस अध्याय में चेतना का निर्माण, चेतना का अर्थ, दलितों में चेतना निर्मिती के कारण, दलितोध्दार एवं दलित, जागरण का कार्य, आदि को स्पष्ट करते हुए दलित-चेतना की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। साथ-ही-साथ आलोच्य उपन्यासों में चित्रित दलित चेतना का स्वरुप भी स्पष्ट किया है।

पंचम अध्याय - 'सामाजिक क्रांति के रुप में पात्रों का योगदान' में सामाजिक क्राांति का स्वरुप और कारण स्पष्ट करते हुए क्रांति के दूत के रुप में फुले, शाहु, आंबेडकर आदि के सामाजिक कार्यपर विचार किया है। साहित्यिकारों का कार्य स्पष्ट करते हुए आलोच्य उपन्यासों में सामाजिक क्रांति के नायक के रुप में पात्रों का व्यक्तित्व स्पष्ट किया है।

षष्ठम् अध्याय - 'उपसंहार' में लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया है। दलित जीवन की विविध झाँकियाँ, उसमें होनेवाला परिवर्तन, उत्पन्न होनेवाली चेतना आदि पर विचार किया है।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के हिंदी विभाग अध्यक्ष, डॉ. बी. डी. सगरे के निर्देशन में शोध कार्य करने का अवसर मिला। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा के कारण यह शोध कार्य संपन्न हो सका। श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. बी. डी. सगरेजी ने व्यस्त क्षणों में अपना अमूल्य समय देकर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा आँचलिक उपन्यास के अध्ययन में मुझे उत्साह और प्रेरणा दी। उसके फलस्वरुप यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका। उनके प्रति शाब्दिक आभार मेने हृदय में स्थित कृतज्ञपूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राचार्य आर. जी. चव्हाण, प्राचार्य बी. बी. सावंत, प्राचार्य एम्. के. यादव, प्राचार्य ए. बी. बर्गे, डॉ. पी. एस्. पाटील (कोल्हापुर), डॉ. अर्जुन चव्हाण (कोल्हापुर), डॉ. वाय. बी. धुमाळ (कराड), डॉ. आर. जी. देसाई (सांगली), श्री. एस्. बी. काळे (सतारा), प्रा. जयवंत जाधव, प्रा. शिवाजीराव लेंभे, प्राचार्य डॉ. सौ.छायादेवी घोरपडे,, प्रा. एम्. एस्. शिंदे, सतारा, प्रा. प्रदिप नलवडे (कोरेगांव), श्री. आर. ई. काळे, श्री. पी. एस्. पंडित, श्री. एस्. बी. वाघिरे, सौ. डी. डी. देसाई (सतारा) आदि के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे समय-समयपर बहुमूल्य मार्गदर्शन किया।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के कार्य में लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. एस्. ई. जगताप तथा अन्य कर्मचारी, छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय ग्रंथपाल श्री. बी. एस्. गायकवाड, तथा श्री. ए. बी. पोरे, श्री. एम्. एस्. पावस्कर, श्री. जी. आय. खान तथा अन्य कर्मचारी बी. बी. निंबाळकर, एस्. एल्. सावंत आदि की मैं विशेष ऋणी रहूँगी, जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में अत्यंत तत्परता से मेरी सहायता की।

मेरे शोध कार्य में सदा प्रेरणा देनेवाले मेरे पूज्य पिताजी श्री. मुकुंदराव यशवंत निंबाळकर, माँ सौ.कांता मुकुंदराव निंबाळकर, मेरे पति श्री. रविंद्र सर्जेराव शिंदे, जिजाजी श्री. विजय नारायण माने, बहने सौ.मंदा विजय माने, कु. नंदा, कु. अर्चना, बेटा अनिकेत, बेटी अनघा और सौ. अरुणा सगरे, सौ. जयप्रभा जाधव आदि के आशिष के बलपर प्रस्तुत शोध कार्य संपन्न हुआ। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। साथ-ही-साथ मेरे सहपाठी वनिता कर्णे, विद्या देशमुख, संजय क्षीरसागर, संतोष कदम, संजय येवले आदि ने मेरी विशेष मदद की है। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

अंत में इस लघु शोध प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकित करनेवाले मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री. मुकुंद ढवलेजी तथा उनके सहकारी श्री. राजू कुलकर्णीजी की कृतज्ञ हूँ।

Nimbalkar

सतारा. **(कु. कुंदा मुकुंदराव निंबाळकर)**

दिनांक : 29-6-2001